हनुमान चालीसा | By Shailendra Jain , Anjali Jain |

श्रीगुरु चरन सरोज रज, निज मनु मुकुरु सुधारि।
बरनउ रघुबर बिमल जसु, जो दायक फल चारि।
बुद्धिहीन तनु जानिके, सुमिरौ पवन-कुमार।
बल बुद्धि बिद्या देहु मोहिं, हरहु कलेस बिकार।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।
रामदूत अतुलित बल धामा।
अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा।
महाबीर बिक्रम बजरंगी।
कुमति निवार सुमति के संगी।
कंचन बरन बिराज सुबेसा।
कानन कुंडल कुंचित केसा।

मंगल भवन मंगल हारी।
द्रवहु सुदशरथ अजर बिहारी॥

हाथ बज्र औ ध्वजा बिराजै।
काँधे मूँज जनेऊ साजै।
संकर सुवन केसरी नंदन।
तेज प्रताप महा जग बंदन।
विद्यावान गुनी अति चातुर।
राम काज करिबे को आतुर।

प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया।
राम लखन सीता मन बसिया।

दुनिया चले ना श्री राम के बिना।
राम जी चले ना हनुमान के बिना॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा।
बिकट रूप धरि लंक जरावा।
भीम रूप धरि असुर सँहारे।
रामचंद्र के काज सँवारे।
लाय सजीवन लखन जियाये।
श्री रघुवीर हरषि उर लाये।
रघुपति कीन्ही बहुत बड़ाई।
तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई।
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं।
अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं।
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा।
नारद सारद सहित अहीसा।
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते।
कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते।
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा।
राम मिलाय राज पद दीन्हा।
तुम्हरो मंत्र बिभीषन माना।

लंकेस्वर भए सब जग जाना।
जुग सहस्र जोजन पर भानु।
लील्यो ताहि मधुर फल जानू।
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं।
जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं।
दुर्गम काज जगत के जेते।
सुगम अनुग्रह तुम्हारे तेते।
राम दुआरे तुम रखवारे।
होत ना आज्ञा बिनु पैसारे।
सब सुख लहै तुम्हारी सरना।
तुम रक्षक काहू को डर ना।
आपन तेज सम्हारो आपै।
तीनों लोक हाँक ते काँपै।
भूत पिसाच निकट नहिं आवै।
महाबीर जब नाम सुनावै।
नासै रोग हरै सब पीरा।
जपत निरंतर हनुमत बीरा।

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b9%e0%a4%a8%e0%a5%81%e0%a4%ae%e0%a4%be%e0%a4%a8-%e0%a4%9a%e0%a4%be%e0%a4%b2%e0%a5%80%e0%a4%b8%e0%a4%be-by-shailendra-jain-anjali-jain-2/